Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com

ISSN : 2321- 4708
July 2019, Year - 6 (75)
Paper ID : RRJ000013

सदुक्तिकर्णामृत का विषयवैविध्य

संशोधक

डो. शारदा वी. राठोड

अध्यापक,

संस्कृत विभाग,आर. आर. लालन कोलेज, भूज (कच्छ)

श्रीधरदास के पिता वटुदास बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन के अधीन महासामन्तचूडामणि थे । वे राज्यीय और प्रशासकीय परिवेश में पले थे और राजा लक्ष्मणसेन भी स्वयं विधासम्पन्न और विधानुरागी थे इसलिए श्रीधरदास को उस विधा की विरासत प्राप्त हुई थी । अतः ऐसा कोई विषय इनके लिए अविषय नहीं था । प्रकृति से लेकर तत्त्वज्ञानसम्भृत कई विषयों में इनकी गति अप्रतिहत थी ।

श्रीधरदास के समय में दूषित प्रशासन व्यवस्था नहीं थी इसलिए इनके द्वारा चूने गये पधों के विषय राजसिक, प्रकृतिगत, ग्रामीण, कृषिविषयक, सामान्यजनमानसतुल्य रहे है । इनके पध इन विषयों के उपरान्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रचनेवाले भी है, जो संस्कृत साहित्य के इतिहास विद्वानों को भी नई दिशा प्रदान करते है । श्रीधरदास की विषयनिरूपणरीति सूक्ष्म और विषयांगपूर्ण है, यथा – देवप्रवाह वीचि में महादेव के पध मुख्य है फिर कवि हरश्रृंगार, हरहास्य, हरशिरः, हरशिरोगङ्गा, हरशिरश्चन्द्रः,हरजटा, हरकपाल, हरनयनम्, हरबाण हरनृत्यारम्भः इत्यादि क्रम से लिखे गये पधों को चूनते है, यहाँ हमें एक सटीक ठोस क्रमबद्धता दिखाई देती है ।

श्रीधरदास ने विषयवैविध्य का अवश्य-पूर्वायोजन किया है । विषय के साथ विषयोंगों का पौवापौर्व तारतम्य भी सोचा है फिर ऐसे विषयांगों का प्रकृतिदत्त स्वरूपवश विभाजन किया है । अतः इसमें मंजी हुई रौनक देखने को मिलती है । इस तरह विष्णु के अवतारनिरूपण को क्रम सुचारु और यथार्थ है, यथा कूर्म, वराह, नरसिंह, त्रिविक्रम(वामन), परशुराम, श्रीराम, हलधर, बुद्ध और कल्की यहाँ विष्णु के अवतारों का साक्षात् क्रम का अनुसरण किया है । फिर कवि ने कृष्णावतार का पूर क्रम चयनित किया है, इसमें कवि का व्यूह लाजवाब है, क्योंकि कवि ने श्रीकृष्णाधारित अनेकानेक पध प्राप्त किये होंगे और यह स्वाभाविक है कि पूर्वमध्यकालीन कवियों ने अधिकतम मात्रा में कृष्ण विषयक पध लिखे थे । यदि इन पधों को सुसंकलित करना है तो उसे सविशेष विषयविभाजन देना होगा जो श्रीधरदास ने किया । श्रीधरदास ने देवप्रवाह की वीचि क्रमांक ५१ से ६२ तक इन १२ वीचियों में ६० पध कृष्णविषयक संकलित किये है । उनके बाद इन सारे अवतार जिनके हैं उस हरि (विष्णु) के पध संकलित किये है – यह श्रीधरदास की संकलन-कला का उत्कृष्ट उदाहरण है ।

द्वितीय श्रृंगारवीचि के संकलन में कवि ने नायिकाओं को उम्र और इनके अनुरूप साहित्यशास्त्रीय लक्षण अनुसार चयनित करके पध प्रस्तुत किये है । यथा वयः सन्धिनायिका, किन्चित् उपारूढयौवना, युवती, मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा, नवोढा, विस्रब्धनवोढा, गर्भिणी, कुलस्त्री, असती और विभिन्न नारी के प्रकार प्रस्तुत है । इस प्रवाह में नारी का अवस्थानुसार रूप वैविध्य ही विषय वैविध्य बनता है । अतः पधों के संकलन दौरान कवि के चित्त में नारी की विभिन्न अवस्था और बाद में अङ्गप्रत्यंगों के वर्णन करने वाले पधों दिये गये है ।

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-6-issue-75-july-2019/RRJ000013

ISSN : 2321- 4708
July 2019, Year - 6 (75)
Paper ID : RRJ000013

तृतीय प्रवाह चाटुप्रवाहवीचयः है । इसमें विविध चाटूक्तियाँ संकलित की गई है । चाटु का अर्थ प्रशस्तिविशेष । यहा चाटुप्रवाह में कुल मिलाके ५४ वीचि है । चाटुवीचि में चाटु, सम्मुखचाटु, विधा, गुण, धर्म, दृष्टि, भुजा, हाथ, चरण, प्रियकथन अत्युक्ति, विचित्रोक्ति, मनुष्य के गुण देश और आश्रय, दान और दरिद्रों का पोषण, पराक्रम, पौरुष, सेना, सैन्य, शत्रु और विविध कीर्तियाँ जेसे विषयों को लेकर उनकी चाटूक्तियाँ संकलित की गई है । श्रीधरदास ने चाटुप्रवाह वीचि के माध्यम से संस्कृत साहित्य में अल्पप्रख्यात कवियों के पद्य लिये है । कवि ने विषयों का विन्यास सुचारु किया है, कवि की संकलनकला सोपानबद्ध है । चाटुप्रवाह की एक और विशेषता हमे आकर्षित करती है वह यह है कि कई उक्तियाँ श्लिष्ट है औ र कई पद्य में विविध शास्त्रों के संदर्भ निबद्ध किये है । काव्यतत्त्व की दृष्टि से भारतीय अलंकारशास्त्र में भी इन पद्यों का विशेष महत्त्व बनता है । श्रीधरदास ने तटस्थतापूर्वक छन्द-अलंकार से भूषित और समृद्ध काव्यतत्त्वसम्पन्न पद्यों को संकलित करके भारत की उत्युत्कृष्ट निधि का हमे परिचय दिया है ।

अपदेशप्रवाहवीचि नामक चतुर्थ प्रवाह में श्रीधरदास ने आरम्भ में देवता स्तवन के पद्यों को संकलित करके फिर प्रकृति के सर्व तत्त्वों के उपादान ग्रहण किये है । इस प्रवाह में अन्योक्ति अथवा अप्रस्तुतप्रशंसा का सविशेष आलम्बन किया गया है । अतः ऐसे कवियों के पद्य में अपदेश तो है ही किन्तु उनमें सालंकार समुन्नत काव्यसुष्मा का भी विनियोग दिखाई देता है ।

अपदेशप्रवाह के अध्ययन से हमे यह प्रतीत होता है कि भारतभूमि के प्रायः सभी राज्यों में उनके राजाओं द्वारा संस्कृत साहित्य को बढावा देने की प्रचुर प्रवृत्तियाँ होती रहती थी । नृपति वर्ग विविध कवियों को आश्रय देते थे, उनकी कृतियों का अनुभावन होता रहता था । भारतवर्ष के प्रत्येक राज्य में साहित्य की धारा अस्खलित बहती थी । श्रीधरदास ने चूने हुए कवियों की संख्या ५०० (पाँचसो) तक की है तो यह अनुमान हो सकता है कि श्रीधरदास ने सहस्राधिक कवियों के पद्य पढे हुए होंगे और उनमें से उत्कृष्ट पाँचसो कवियों के पद्य संकलित किए है अतः श्रीधरदास का यह संकलनग्रन्थ विशेष कवियों के विशेष पद्य विशेष तौर पे चूने है जो भारत की साहित्यसाधना के दिव्य प्रतिमान बनते है । हमारा यह सौभाग्य है कि श्रीधरदास के कारण हमारी साहित्यसंपदा कालग्रस्त होने से बच गई है । श्रीधरदास ने भारतवर्ष के नवोदित कवियों को सम्मान देकर वास्तव में भारत की साहित्यधारा को पुष्टतम बनाई है इनके परितोष से संस्कृत वाङ्मय पूर्ण परिपुष्ट है ।

पंचम उच्चावच प्रवाह में ७६ वीचियाँ है, जिसमें मनुष्य से लेकर विविध राजाओं की प्रशस्तियाँ तक के पद्य संकलित है । उच्चावच का अर्थ है वैविध्यपूर्ण । इस प्रवाह में वीचि वैविध्य होने के कारण श्रीधरदास ने इस प्रवाह का नाम उच्चावचप्रवाह रखा है । इसमें मनुष्य की उच्चावचता, पशुओं की उच्चावचता, पक्षियों की उच्चावचता, कविगण की उच्चावचता और गृहस्थों की उच्चावचता निबद्ध है । विषयवैविध्य की दृष्टि से देवकोटि, मनुष्यकोटि, पशुपक्षीकोटि, प्रकृतिकोटि और मनुष्य के स्वभाव की अधिकांश विशेषताएँ इस प्रवाह में संकलित है ।

श्रीधरदास ने इस प्रवाह में संसार के समस्त जीवों की उनकी प्रकृति की विविध गतिविधियाँ वाले पद्य संकलित किए है चूँकि इस प्रवाह अंतिमप्रवाह होने के कारण उपसंहारानुकूल पद्यों के चयन करने में श्रीधरदास ने सावधानता बर्ती है । उदाहरणतः श्रीधरदास ने संकलित किये हुए पद्यों के विषयों के क्रम को यदि हम देखे तो उनमें सोपानक्रमबद्धता दिखाई देती है जो इस प्रकार है - कवि, विभिन्न कवि, प्रत्येक कवि, मनस्वी कवि, कवि के लिए दान, गुणवर्ग, वाणी, काव्य, काव्यमात्सर्य,

ISSN : 2321- 4708
July 2019, Year - 6 (75)
Paper ID : RRJ000013

काव्यचौर – यहाँ कवि से सम्बद्ध विषयों का कोई एक निश्चित क्रम हमें दिखाई देता है – यह श्रीधरदास की संकलनकला का कौशल स्फूट प्रतीत होता है ।

सन्दर्भ

(१) **सदुक्तिकर्णामृत**
श्री पण्डित रामावतार शर्मा,
पंजाब ओरिअेन्टल सीरीज, लाहौर, १९३३

(२) **सदुक्तिकर्णामृत,**
सुरेशचन्द्र बेनर्जी,
प्र. फर्मा मुखोपाध्याय, कलकत्ता, १९३५ ।

(३) **सूक्तिरत्नहार :**
के. साम्बशिवा शास्त्री,
शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, ई. २००५ ।

(४) **सुभाषितावलिः**
डाक्टर पीटर पीटर्सनाख्येन,
एल्फिन्स्तनविधालय, जयपुर, १८८६ ।

(५) **सुभाषितरत्नभाण्डागारम्,**
नारायण राम आचार्य,
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान्, २०११ ।

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-6-issue-75-july-2019/RRJ000013